discuss this issue. You can bring in another motion to discuss electoral reforms or anything. We are prepared to discuss. But he says the statute gives him much wider power we say 'no', these powers are not that wider as you assume them to be. Then, who has to decide ? It is the Supreme Court. Now the Supreme Court is seized of this matter and has given advice to the Election Commission not to hold up elections. Fortunately, these things are being straightened up. Let us not worsen it more because it is a matter *sub judice*.

———

CLARIFICATIONS ON THE STATEMENT BY MINISTER

Police Firing in Calcutta on the 21st July, 1993

THE DEPUTY CHAIRMAN : Now, who wants to ask clarifications on this ?

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM (Uttar Pradesh) : Madam, Let us discuss it tomorrow.

THE DEPUTY CHAIRMAN : No, we cannot postpone it. Let us finish it today itself. Only one quesion I will allow.

श्री संघ प्रिय गौतम : हम भी पूछेंगे ।

उपसभापति : आज ही ।

I will also allow you one question. Let him finish.

श्री मोहम्मद अमीन (पश्चिमी बंगाल) : मैडम, 21 जुलाई को कलकत्ता में पुलीस की जो फायरिंग हुई, उस सिलसिले में होम मिनिस्टर साहब ने इस ऐवान में जो बयान दिया था, उसको पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगा कि इस बयान में स्टेट गवर्नमेंट जो कुछ कहना चाहती है, उसके लिए कोई जगह नहीं है और यूथ कांग्रेस की तरफ से जो बयान दिया गया है उसीको होम मिनिस्टर साहब ने यहां दोहरा दिया है । पुलिस की गोली से किसी की मौत हो जाए, यह कोई अच्छी बात नहीं है, इसके बारे में दो रायें हीं हो सकती और यकीनन 21 जुलाई को जो पुलिस की फायरिंग हुई, वह अफसोसनाक बात हुई । लेकिन होम मिनिस्टर साहब ने अपने बयान में यह नहीं बताया कि पुलिस को किन हालात में वह गोली चलानी पड़ी ? जब रास्ता बंद कर दिया जाए, पुलिस के ऊपर पत्थर फैंके जाएं, बम मारे जाएं और पाइप गन से गोलियां चलाई जाएं, उस हालत में पुलिस को क्या करना चाहिए ? यह सवाल है जिसका जवाब मंत्री महोदय हमको दें ?

दूसरा, यह है कि जब इस किस्म की वारदात किसी ऐसी रियासत में होती है जहां हुकूमत कांग्रेस की होती है तो बयान एक किस्म का आता है और जहां हुकूमत अपोजिशन पार्टियों की होती है तो बयान दूसरी किस्म का आ जाता है । यह इम्तयाज क्यों ? अभी आंध्र प्रदेश में कुछ दिनों पहले एक एम० एल० ए० का मर्डर हो गया । उस वक्त यह सुना गया था कि यह लॉ एंड आर्डर स्टेट सब्जेक्ट है । अभी-अभी भारद्वाज साहब ने भी इसी बात को दोहराया । लेकिन कलकत्ता को जब पुलिस फायरिंग हुई, तो उसको स्टेट का लॉ एंड आर्डर क्यों नहीं करार दिया गया ? चीफ मिनिस्टर साहब से होम मिनिस्टर साहब की क्या बातें हुई, वह तो बयान नहीं किया गया, बल्कि कलकत्ते में उन्होंने एक बयान यह भी दिया था कि जुडिशियल इंक्वायरी करना चाहें तो हम मरकज़ी गवर्नमेंट की तरफ से करा सकते हैं, लेकिन बेहतर यह होगा कि स्टेट गवर्नमेंट जुडिशियल इंक्वायरी कराए । मेरे ख्याल में यह बात बोलना भी मुनासिब नहीं है । ऐसे मामलात में जुडिशियल इंक्वायरी का फैसला स्टेट गवर्नमेंट करती है और स्टेट गवर्नमेंट ने बहुत साफ तरीके से कह दिया है कि इसमें जुडिशियल इंक्वायरी की कोई जरूरत नहीं है । उसके ऊपर होम मिनिस्टर साहब का यह बयान रियासत के मामले में मुदाखलते बेजा है और इससे सेंटर-स्टेट रिलेशंस के और बिगड़ने का इंकाम बढ़ जाता है । इसलिए इससे परहेज करना चाहिए । होम मिनिस्टर साहब, मेहरबानी करके यह बताएं कि उन्होंने जो बयान दिया है उससे बंगाल में और कलकत्ता में यूथ कांग्रेस के उन लोगों की हौसला अफजाई होती है, जो कानून तोड़ते हैं और ऐसी सरगरमियों में मुलव्विस रहते हैं जिससे कलकत्ता का अमनो-आमन बरबाद होता है । बंगाल में कांग्रेस को बचाने का यह रास्ता नहीं है । अगर बंगाल में कांग्रेस और यूथ कांग्रेस को बचाना चाहते हैं तो जो गैर-जिम्मेदाराना हरकतें होती है उनको कंडम करना चाहिए और उनको भी अमन बरकरार रखने में उनका ताबुन मिले, इस बात की हिदायत देनी चाहिए । आंखे बंद करके इस तरह सपोर्ट करके कांग्रेस पार्टी बंगाल में बच नहीं सकती । वह डूब रही और डूब जाएगी ।

†[شری محمد امین "پشچمی بنگال" : میڈم ۲۱ر جولائی کو کلکتہ میں پولیس کی جو فائرنگ ہوئی اس سلسلے میں ہوم منسٹر صاحب نے جو بیان اس ایوان میں دیا تھا اس کو پڑھنے کے بعد مجھے ایسا لگا کہ اس بیان میں اسٹیٹ گورنمنٹ جو کچھ کہنا چاہتی ہے اس کے لئے کوئی جگہ نہیں ہے اور یوتھ کانگریس کی طرف سے جو بیان دیا گیا ہے اسی کو ہوم منسٹر

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

کہ جوڈیشل انکوائری کرنا چاہیں تو ہم مرکزی گورنمنٹ کی طرف سے کرا سکتے ہیں۔ لیکن بہتر یہ ہوگا کہ اسٹیٹ گورنمنٹ جوڈیشل انکوائری کرائے۔ میرے خیال میں یہ بات بولنا بھی مناسب نہیں ہے۔ ایسے معاملات میں جوڈیشل انکوائری کرائے۔ میرے خیال میں یہ بات بولنا بھی مناسب نہیں ہے۔ ایسے معاملات میں جوڈیشیل انکوائری کا فیصلہ اسٹیٹ گورنمنٹ کرتی ہے اور اسٹیٹ گورنمنٹ نے بہت صاف طریقہ سے کہہ دیا ہے کہ اس میں جوڈیشیل انکوائری کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔ اس کے اوپر ہوم منسٹر صاحب کا یہ بیان کہ ریاست کے معاملہ میں مداخلت بے جا ہے۔ اور اس سے سینٹر۔ اسٹیٹ ریلیشنس کے اور بگڑنے کا امکان بڑھ جاتا ہے۔ اس لئے اس سے پرہیز کرنا چاہیئے۔ ہوم منسٹر صاحب مہربانی کرکے یہ بتائیں کہ انھوں نے جو بیان دیا ہے اس سے بنگال میں اور کلکتہ میں یوتھ کانگریس کے ان لوگوں کی حوصلہ افزائی ہوتی ہے جو قانون توڑتے ہیں اور ایسی سرگرمیوں میں ملوث رہتے ہیں۔ جس سے کلکتہ کا امن و امان برباد ہوتا ہے۔ بنگال میں کانگریس کو بچانے کا یہ راستہ نہیں ہے۔ اگر بنگال میں کانگریس اور یوتھ کانگریس کو بچانا چاہتے ہیں تو جو غیر ذمہ دارانہ حرکتیں ہوتی ہیں اُن کو کنڈم کرنا چاہیے۔ اور ان کو بھی امن برقرار رکھنے میں اُن کا تعاون ملے۔ اس بات کی ہدایت دینی چاہیے۔ آنکھیں بند کرکے اس طرح صاحب نے یہاں دہرا دیا ہے۔ پولیس کی گولی سے کسی کی موت ہو جائے یہ کوئی اچھی بات نہیں ہے اس کے بارے میں دو رائے نہیں ہو سکتیں۔ اور یقیناً ۲۱ جولائی کو جو پولیس فائرنگ ہوئی وہ افسوس ناک بات ہوئی۔ لیکن ہوم منسٹر صاحب نے اپنے بیان میں یہ نہیں بتایا کہ پولیس کو کن حالات میں وہ گولی چلانی پڑی۔ جب راستہ بند کر دیا جائے پولیس کے اوپر پتھر پھینکے جائیں۔ بم مارے جائیں اور پائپ گن سے گولیاں چلائی جائیں اس حالت میں پولیس کو کیا کرنا چاہیئے۔ یہ سوال ہے جس کا جواب منتری مہودہم کو دیں۔

دوسرا یہ ہے کہ جب اس قسم کی واردات کسی ایسی ریاست میں ہوتی ہیں تو بیان ایک قسم کا آتا ہے اور جہاں حکومت اپوزیشن پارٹیوں کی ہوتی ہے وہاں بیان دوسری قسم کا آجاتا ہے۔ یہ امتیاز کیوں۔ ابھی آندھرا پردیش میں کچھ دنوں پہلے ایک ایم۔ ایل۔ اے کا مرڈر ہو گیا تھا۔ اس وقت یہ سُنا گیا تھا کہ یہ لا اینڈ آرڈر اسٹیٹ سبجیکٹ ہے۔ ابھی ابھی بھاردواج صاحب نے بھی اسی بات کو دہرایا۔ لیکن کلکتہ کی جب پولیس فائرنگ ہوئی تو اس کو اسٹیٹ لا اینڈ آرڈر کیوں قرار دیا گیا۔ چیف منسٹر صاحب سے ہوم منسٹر صاحب کی کیا بات ہوئی وہ تو بیان نہیں کیا گیا۔ بلکہ کلکتہ میں انھوں نے ایک بیان یہ بھی دیا

سپورٹ کر کے کانگریس پارٹی بنگال میں بچ نہیں سکتی۔ وہ ڈوب رہی ہے اور ڈوب جائے گی۔]

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान (आंध्र प्रदेश) : मैडम, 21 जुलाई को कलकत्ता में जो फायरिंग हुई और फायरिंग के फैरी बाद कोई खास नोटिस सेंट्रल गवर्नमेंट की तरफ से नहीं ली गई । 26 जुलाई से हमारे पार्लियामेंट का सेशन हुआ । 26 जुलाई को कोई बयान नहीं हुआ । 27 जुलाई को सेशन हुआ लेकिन कोई स्टेटमेंट होम मिनिस्टर साहब ने नहीं दिया । 28 जुलाई को भी सेशन था, उस वक्त भी होम मिनिस्टर साहब ने कोई स्टेटमेंट नहीं दिया । जब 28 जुलाई को लोक सभा में वोट आफ नो कॉफिडेंस नाकाम हो जाता है तो उसके बाद होम मिनिस्टर साहब 29 जुलाई को इस हाउस में स्टेटमेंट देते हैं । तो क्या मै होम मिनिस्टर साहब से पूछ सकता हूं कि क्या यह पौलिटिकली मोटिवेटिड नहीं है । अगर फायरिंग 21 जुलाई को हुई थी, तो 26 जुलाई को सेशन शुरू हुआ था तो सेशन के दिन आपने इसको पार्लियामेंट में बयान क्यों नहीं दिया ?

[شری محمد خلیل الرحمان "آندھرا پردیش": میڈم ۲۱ جولائی کو کلکتہ میں جو فائرنگ ہوئی اور فائرنگ کے فوری بعد کوئی خاص نوٹس سینٹرل گورنمنٹ کی طرف سے نہیں لی گئی۔ ۲۶ جولائی سے ہمارے پارلیمنٹ کا سیشن ہوا۔ ۲۶ جولائی کو کوئی بیان نہیں ہوا۔ ۲۷ جولائی کو سیشن ہوا لیکن کوئی اسٹیٹمنٹ ہوم منسٹر صاحب نے نہیں دیا۔ ۲۸ جولائی کو بھی سیشن تھا اس وقت بھی ہوم منسٹر صاحب نے کوئی اسٹیٹمنٹ نہیں دیا۔ جب ۲۸ جولائی کو لوک سبھا میں ووٹ آف کانفیڈنس ناکام ہو جاتا ہے تو اس کے بعد ہوم منسٹر صاحب ۲۹ جولائی کو اس ہاؤس میں اسٹیٹمنٹ دیتے ہیں۔ تو کیا میں ہوم منسٹر صاحب سے پوچھ سکتا ہوں کہ کیا یہ پولیٹیکلی موٹیویٹڈ نہیں ہے۔ اگر فائرنگ ۲۱ جولائی کو ہوئی تھی تو ۲۶ جولائی کو سیشن شروع ہوا تھا تو سیشن کے آپ نے اسکو پارلیمنٹ میں بیان کیوں نہیں دیا۔]

श्री संघ प्रिय गौतम : उपसभापति महोदया, अनेकों मामले इस प्रकार के कई राज्यों में हुए हैं जहां पर पुलिस को गोली चलानी पड़ी और गोलियों से आदमी मारे गए हैं । मैं तो पहले यह जानना चाहता हूं कि मेरी जानकारी के अनुसार कलकत्ता में राईटर्स बिल्डिंग को घेरने का मामला और मज़हरे का मामला यूथ कांग्रेस द्वारा हफ्ते पहले प्रकाश में लाया गया था और उन्होंने बाकायदा इसका नोटिस सरकार को दे दिया था । तो मैं पहले तो यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार को इस बात के इमकानात थे और वहां की खुफिया पुलिस की रिपोर्ट थी कि यह जो मुजाहिरा करने वाले हैं, यह पुलिस पर बम फैंकेंगे गोली चलाएंगे और यह हिंसा पर उतारू हो जाएंगे । यदि हां, तो फिर क्या जो सरकार को और पुलिस को इंतजाम करने पड़ते हैं भीड़ को हिंसा से बचाने के लिए, हिंसा पर उतारू भीड़ को रोकने के लिए और उसे डिस्बर्स करने के लिए, वो इसमें पहला क्रम होता है वह होता है पानी फैंकना, उसके बाद में फिर रबर राकेट छोड़ना और उसके बाद में लाठी चार्ज । तो क्या सरकार ने जब देख लिया कि भीड़ हिंसा पर उतारू है तो क्या पहले पानी फैंका गया ? भीड़ अगर नहीं मानी तो फिर क्या रबर के राकेट फैंके गए ? फिर भी भीड़ नहीं मानी तो क्या लाठी चार्ज हुआ ? लाठी चार्ज से भी नहीं मानी तो फिर तब गोलीकांड हुआ ? मेरी सूचना यह है कि गोलीकांड से पहले पहली बातें हस्तेप्राल में नहीं लाई गई । तो जहां तक गोली चलाने का प्रश्न है वह अनुचित है । हमारे यहां भारतीय जनता पार्टी के . . . .

उपसभापति : आप स्पष्टीकरण कर रहे है उनसे कि ऐसा हुआ या नहीं हुआ ? तो मंत्री जी बता दीजिए ।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S. B. CHAVAN) : Madam Chairperson, in fact, if the hon. Members were to go through the statement, paragraph one of the statement clearly gives what was the programme announced by the Youth Congress, and the 2nd and 3rd paragraphs give the details of the State Government's version. And thereafter, in paragraphs 4, 5, 6 and 7, since I had visited the area, I had given my impressions about the whole thing. I don't think that we have made any discrimination between one State and the other. On the other hand, if you were to read the last paragraph, I said :

> "I also met Shri Jyoti Basu, Chief Minister of West Bengal, and urged him to provide relief to the families of the deceased and those injured. I advised him to direct judicial inquiry into the incidents in view of the large number of persons injured and killed as a result of the police firing on 21st July, 1993."

So, this absolutely makes it clear that the Central Government has not taken upon itself to take any action. On the other hand, in the interest of the State Government itself, I have requested Mr. Jyoti Basu that he should give

relief to all those who were injured and he should also institute a judicial inquiry—because 12 people were killed—if the version of the State Government that the mob had become unruly, that they had taken all the precautionary measures is a fact. This programme was not made all of a sudden. It was almost a week before that the entire thing was stated by the Youth Congress. I don't think the Youth Congress trying to gherao the Writers' Building was an issue on which any question of prestige should arise because, at least, my impression after speaking to the hon. Chief Minister of West Bengal was that he was very much perturbed, "How can we allow the seat of power to be gheraoed like this?" I said, "this is nothing new; there are a number of places where even CPM workers also have been doing the same thing, but we take it in our stride and I don't think that we have made it a question of prestige." Twelve people died. That is why it calls for a more serious thinking into the matter. And that is why, instead of doing it myself, I have requested him that it will be in his own interest that he should institute a judicial inquiry. If the Youth Congress people have committed anything wrong, certainly, in the judicial inquiry, the whole thing will come out as to how they were throwing brickbats or bombs or any other things. Whether the barricades were there, what other measures they had taken, all these things will come out in the judicial inquiry. They should have done it. But, ultimately, it is for the State Government to look into the matter.

SHRI M. A. BABY (Kerala): Chavanji, will you please yield for a minute?

SHRI S. B. CHAVAN: I am now finishing.....

SHRI M. A. BABY: I have just one specific question. I understand that there was a video-cassette being given to the hon. Home Minister where shots of bombs being thrown and fire arms being used by the so-called peaceful demonstrators can be very clearly seen. And, Madam, from that video-cassette itself, the hon. Home Minister—he is a seasoned and highly experienced statesman—can come to the conclusion that the situation was absolutely explosive. By not holding any brief for what had happened with many people getting killed and all that the whole situation should be viewed in the background of the way in which the unruly mob behaved by throwing bombs and using fire-arms.

SHRI S. B. CHAVAN: The hon.Chief Minister of West Bengal gave me the video cassette. I have gone through it; I have seen it myself, and in the cassette it is only the brick-batting about which things become absolutely clear. There is nothing to show that any fire-arms were used by anyone or bombs were thrown. There is nothing in the cassette. The cassette is still in my possession and if the hon. Members are interested, I am prepared to hand over the cassette to you and you go through it and satisfy yourself about the kind of cassette that he gave me and there is no reason why I should disbelieve the hon. Chief Minister. That is why I requested him that it would be better if relief was given and that he should have gone and seen the things. After all, there are a number of people who demonstrate before us and when they are injured, it becomes our duty to go and see them. Neither has he seen them nor given any relief nor is he prepared to hold any judicial inquiry. That is why I thought it necessary to discuss the matters with the Chief Minister; otherwise it will be a one-sided story. I personally went to him and discussed the matters with him and told him that this was not fair. Whether it was the Youth Congress or any other party for that matter, if anything of this nature were to happen, it would be in his own interest to see that proper steps are taken in order to alleviate any kind of grievances that anybody might have.

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO (Andhra Pradesh): I request the Home Minister to clarify whether on any similar occasion in the past he has been to the field or had gone to the State concerned. Did he ever go to see any such thing in response to the call from the Opposition?

THE DEPUTY CHAIRMAN: If he did not go in the past, he went this time. Next time I hope there is no such occasion. But I think it is a good thing which he did. Why should you object to it?

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO: It is unprecedented. He acted like a Congress Home Minister, not the Home Minister of India. He has commented on the State Government. Did he ever do such a thing in regard to any Congress Government? That is what we ask. Did he ever do it? I myself brought to his notice on 27th July that certain horrible things had taken place in Guntur district. Was he kind enough to at least make a statement on that? He did not do. A murder has taken place in Andhra Pradesh and as a reaction to it, so many things are happening. The entire Opposition is on fast

for one day. Was he kind enough to go there and enquire?

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Minister went.

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO: Why has he taken so much of pains in response to certain Congressmen?

THE DEPUTY CHAIRMAN: That is not the point.

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO: This incident was condemned by the whole of India.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am not allowing that point.

SHRI MOTURU HANUMATHA RAO: The whole of India has condemned the demonstration by the Youth Congress-I.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Minister went to Andhra. I have allowed, not twice but 3 to 4 times questions on the Andhra situation. So, don't cite examples of this kind. If the Home Minister went there, it was good.

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान : यह तो होम मिनिस्टर साहब से पूछ रहे हैं । यह किसी ने डिनाई नहीं किया आपने तो बराबर मौका दिया । यह होम मिनिस्टर साहब से पूछ रहे हैं कि क्या आप हैदराबाद गये और जाकर मालूम किया कि क्या हुआ ।

†[شری محمد خلیل الرحمٰن : یہ تو ہوم منسٹر صاحب سے پوچھ رہے ہیں۔ یہ کسی نے سنا ہی نہیں کیا آپنے تو برابر کہا دیا۔ یہ ہوم منسٹر صاحب سے پوچھ رہے ہیں کہ کیا آپ حیدرآباد گئے اور جاکر معلوم کیا کہ کیا ہوا۔]

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have also allowed three times. Don't make wrong statements on the floor of the House.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA (Uttar Pradesh): When Mr. Nanda was the Home Minister, he went similarly when there was a *gherao*.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If the Home Minister went, why should you object? He went to see the law and order situation. He can go anywhere he likes. He is the Home Minister of the country.

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

SHRI JAGMOHAN (Nominated): The point is, if the mob was using bombs, and even if it is true, it is all the more reason that a judicial inquiry should be held to find whether bombs were used, because if bombs were used, that shows the failure of the intelligence agencies that they did not know that the crowd was carrying bombs. And the other need for a judicial inquiry is that there is administrative failure to control the mob, to make proper arrangements after they had some time and some notice for it when proper barricading could have been done. Proper equipment should have been supplied. Sufficient deployment should have been there.

Madam, so far as I know, there was an agreement in the Chief Ministers' conference sometime ago that whenever there was any serious rioting, a judicial enquiry should be held so that such things do not recur. You get some lessons out of it in regard to administrative failure or other things. Then, on that basis, suggestions could be made to the State Governments to avoid such mistakes in future. In fact, there was one circular issued that you should first use rubber bullets, you should use water-hoses, that you should not resort to firing in the very beginning. If there are proper arrangements like barricading and other things, this type of killing could be avoided, in spite of the fact that the mob was indulging in violence.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, it is over. We now take up the Government Motion on drug policy. The hon. Minister, Mr. Eduardo Faleiro, to move the motion.

Motion for consideration of Background Note on Review of Drug Policy, 1986

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CHEMICALS AND FERTILISERS (SHRI EDUARDO FALEIRO): Madam, I move:

> "That the background note on review of drug policy, 1986, which was laid on the Table of the Rajya Sabha on 12th August, 1992, be taken into consideration."

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Minister has moved the motion. He will make the speech tomorrow.